कहानी हैदराबाद की

नरेन्द्र लूथर द्वारा अंग्रेज़ी में रचित पुस्तक **'हैदराबाद ए बॉयोग्राफी'** का धारावाहिक अनुवाद -

पुलिस एक्शन के बाद-2

कमीश्नर और कलेक्टर के पद से जुड़े कई अधिकारियों को निलम्बित किया गया। पद को घटाने संबंधी भी कई मामले थे। यह स्थिति चहूँ ओर छायी थी। कुछ मामलों में ऐसे ही मानमाने ढंग से अधिकारियों को हटाया जा रहा था। इनमें से कुछ घटनाएँ हास्यास्पद थीं, तो कुछ नितांत दु:खद।

गतांक से आगे-

इसके पश्चात जनरल चौधरी ने रैविन्यु बोर्ड का दौरा किया। सैय्यद कलीमुल्लाह कादरी बोर्ड का सदस्य था। वह काफी रुढ़िवादी और अपने धर्म का कट्टर समर्थक था। वह अपने वेतन 2250/- रु. में से केवल 300 रु. रख कर बाकी दान में दे देता था। वह ग्रुप फोटो में भी यह कहते हुए नहीं आता था कि इस्लाम में फोटोग्राफी निषेध है। इसे मिलिट्री गवर्नर द्वारा अपमान माना गया, लेकिन इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया। उसके बाद उसे स्थानांतरित कर आबकारी विभाग का कमिश्नर बना दिया गया। कादरी ने यह पद इस दलील पर स्वीकार नहीं किया कि यह भी इस्लाम की 'विचारधारा' के प्रतिकूल है, क्योंकि इससे शराब जुड़ी हुई है, जो उसके धर्म में वर्जित है। बाद में उसे आईएएस की नियुक्ति पर विचारने के लिए इन्टरव्यू के लिए बुलाया गया। उसने यह कहते हुए मना कर दिया कि हैदराबाद सिविल सर्विस आईसीएस के बराबर है और वह उस स्तर पर है, जहाँ इन्टरव्यू लिए जाते हैं न कि दिये जाते। उसे कलेक्टर बना कर औरंगाबाद भेज दिया गया, जहाँ से वह सेवानिवृत्त हुआ।

जिले का सिविल प्रशासन, आईसीएस अधिकारी खासकर बम्बई या मद्रास क्षेत्रों से चुने जाते थे और उन्हें अपने-अपने जिलों में कलेक्टर से ऊपर रखा जाता था। वह परिस्थिति को अपने आंकलन अनुसार संभालते थे। पिम्पुटकर बम्बई से एक अक्खड़ आईसीएस अफ़सर था। उसे बीड जिले का कार्यभार सौंपा गया था। वहाँ पहुँचने पर उसने जिला अधिकारियों और सिविल जज श्रीनिवास राव समेत सभी को जेल में डाल दिया। तीन दिन के बाद जब उसे लगा कि वह पूरी तरह टूट चुके होंगे तो उसने श्रीनिवास राव को बुलाया और गोपनीयता से मुसलमान अधिकारियों के विषय में उसकी राय पूछी। राव ने उत्तर दिया कि वह सब ठीक हैं।

उसे लगा कि या तो राव अपने सहकर्मियों का पक्ष ले रहा है या अपने दिमाग का इस्तेमाल नहीं कर रहा। इसलिए उसने उसकी नजरबंदी बढ़ा दी।

हबीब मोहम्मद, वरंगल का कट्टरपंथी कमिश्नर था, उसके बारे में पहले लिखा जा चुका है कि, उसको गिरफ्तार कर लिया गया। उसके भव्य कार्यालय से उसे स्थानीय जेल तक कैदी के कपड़ों में ले जाया गया। बहुत से लोगों को उससे कोई सहानुभूति नहीं थी।

काज़िम जंग मेदक का कलेक्टर था। जब्बार सुभानी जिला शिक्षा अधिकारी था। भारतीय सेना का एक युवा कप्तान कलेक्टर के ऑफिस में तब आया, जब वह दोनों बैठ कर कुछ विचार-विमर्श कर रहे थे। कप्तान ने कलेक्टर से गुस्ताख लहजे में बात करनी शुरू की। सुभानी को वह मुनासिब नहीं लगी। उसने कप्तान को याद दिलाया कि वह कलेक्टर से बात कर रहा है, इसलिए आवाज़ धीमी रखे। कप्तान सुझाव सुनकर गुस्से में आ गया। उसने अपनी पिस्तौल निकाली और शिक्षा अधिकारी को वहीं ढेर कर दिया।

महबूब अली, वरंगल जिले का तहसीलदार था, उसको गिरफ्तार कर ढाई वर्ष के लिए जेल में डाला गया। उस समय पता चला कि अभिकथित अपराधों के दौरान वह वहाँ पर था ही नहीं तो उसे छोड़ दिया गया और दुबारा पद देकर पदोन्नत किया गया।

रैविन्यु बोर्ड के प्रबन्धक मीर विलायत अली ने उस समय रजाकारों के विरुद्ध लेख और पर्चे लिखे थे, जब उनके अत्याचार बढ़ रहे थे। फिर भी पुलिस एक्शन के बाद उसे या तो सेवानिवृत्ति लेने या अपने ऊपर लगे अभियोगों का सामना करने के लिए कहा गया। उसने दूसरे विकल्प को चुना।

कमीश्नर और कलेक्टर के पद से जुड़े कई अधिकारियों को निलम्बित किया गया। पद को घटाने संबंधी भी कई मामले थे। यह स्थिति चहूँ ओर छायी थी। कुछ मामलों में ऐसे ही मानमाने ढंग से अधिकारियों को हटाया जा रहा था। इनमें से कुछ घटनाएँ हास्यास्पद थीं, तो कुछ नितांत दु:खद।

(शेष अगले रविवार)

फिल्म समीक्षा

धोबी घाट

बैनर : आमिर खान प्रोडक्शन्स
निर्माता : आमिर खान, किरण राव
निर्देशक : किरण राव
कलाकार : प्रतीक, मोनिका डोगरा, कृति मल्होत्रा, आमिर खान
सेंसर सर्टिफिकेट : ऐ

यह एक प्रयोगात्मक और वास्तविकता के निकट की फिल्म है, जो आर्ट फिल्म की तरह है।

'धोबी घाट' की कहानी चार किरदारों के इर्दगिर्द घूमती है, जो अलग-अलग पृष्ठभूमि से हैं। चारों की कहानी अलग-अलग है, परंतु एक-दूसरे से कहीं ना कहीं जुड़ी हुई है।

अरुण (आमिर खान) एक पेंटर है, जो कम बोलना और अकेले रहना पसंद करता है। वह रिश्तेनातों में विश्वास नहीं रखता है। यास्मिन (कृति मल्होत्रा) अपने पति की बेरुखी से परेशान है। वह एक वीडियो कैमरे के जरिये मुंबई को शूट कर मन बहलाती है और अपने दिल की बातें कैमरे को बताती है।

शाई (मोनिका डोगरा) शौकिया रूप से कैमरे की आँख से मुंबई का दर्शन करती है। इसमें उसका साथ देता है बिहार से आया मुन्ना (प्रतीक), जो धोबी है, लेकिन फिल्मों में हीरो बनना उसका सपना है।

इनके अलावा अनोखी भूमिका में मुंबई है, जो चुपचाप इन किरदारों की गतिविधियों को देखता रहता है। उनकी उत्कंठा, अकेलापन, अनुभव और प्यार के जरिये इस शहर को दिखाया गया है।

किरण राव ने एक निर्देशक के रूप में अच्छी शुरुआत की है। उनकी फिल्म और किरदार वास्तविक जीवन के बेहद करीब हैं। उनका दु:ख, दर्द, हँसी, खुशी आम लोगों जैसी है। इसलिए फिल्म में उत्सुकता बनी रहती है।

कहानी कहने के लिए उन्होंने जटिल तरीका अपनाया है जिसकी वजह से एक आम-दर्शक को फिल्म समझने में कठिनाई हो सकती है। किरण ने दर्शक की समझदारी पर भी काफी कुछ छोड़ा है और प्रस्तुतिकरण ऐसा रखा है कि दर्शक भी सक्रिय होकर फिल्म देखें।

फिल्म में अधिकांश अपरिचित व नए चेहरे हैं, जो इस कहानी के पात्रों के अनुकूल हैं। मोनिका डोगरा ने शाई के किरदार को बखूबी निभाया है।

प्रतीक ने कम पढ़े-लिखे लड़के की भूमिका को बखूबी निभाया है। उनकी डॉयलॉग डिलेवरी और हावभाव देखने लायक है। कुछ दृश्यों में उनका अभिनय कमाल का है। यास्मिन बनी कृति मल्होत्रा भी प्रभावित करती हैं।

आमिर खान के अभिनय में कोई खोट नहीं है, लेकिन उनकी जगह नया चेहरा होना चाहिए था, क्योंकि उनकी सुपरस्टार की छवि लगातार परेशान करती रहती है।

तुषार कांति रे की सिनेमॉटोग्राफी उल्लेखनीय है। मुंबई की वास्तविक लोकेशन्स को उम्दा कोणों से उन्होंने गजब का शूट किया। मुंबई की सँकरी गलियाँ, समुद्र, धोबी घाट, पुराने मकान और बाजार, ब्लैक एंड व्हाइट फोटोग्राफ्स, वीडियो डायरी और पेंटिंग के जरिये देखने को मिलती है। यास्मिन की वीडियोग्राफी की अपरिपक्वता को भी उन्होंने बेहतरीन तरीके से पेश किया है। फिल्म का बैकग्राउंड म्यूजिक कहानी के मूड के अनुरूप है।

कुल मिलाकर 'धोबी घाट' उन लोगों के लिए है, जो धैर्य के साथ कला फिल्म का आनंद उठाना पसंद करते हैं।

सतपंथी खोजा समुदाय
हिन्दू और इस्लाम धर्मों के मध्य सांस्कृतिक सेतु

पीर सद्रुद्दीन की समाधि

संभवत: बहुत कम लोग यह जानते होंगे कि इक़बाल ने राम को 'इमामे हिंद' माना और गायत्री मंत्र का उर्दू भाषा में अनुवाद भी किया। सनातन-धर्म के इस मंत्र की तरह प्रत्येक धर्म में एक विशिष्ट मंत्र होता है, जैसे इस्लाम में कलमा, जैन-धर्म में नवकार तथा बौद्ध-धर्म में मणिपद्मोहम्। हिंदू-संस्कृति में गायत्री मंत्र को शाश्वत सत्य मान कर इसका जाप श्रद्धा और भक्ति से किया जाता है -

ओऽम् भूर्भुव: स्व: तत्सवितुरवरेण्यम्।
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योन: प्रचोदयात्।।

सर मुहम्मद इक़बाल ने गायत्री मंत्र की महत्ता को स्वीकारा और इससे प्रेरित हो कुछ इस तरह से अनुवाद किया-

है महफ़िले वजूद का सामां तराज़ तू,
यज़दाने सक़ीनाने नशेबो फ़राज़ तू।
हर चीज़ की हयात का परवरदिगार तू,
जायदगाने नूर का है ताज़दार तू
ऐ आफ़ताब हमको ज़िआये शऊर दे,
चश्मे ख़िराद को अपनी अज्जली से नूर दे।।

भारत में इस्लाम-धर्म एवं सनातन-धर्म के मध्य विचारों तथा दर्शन का आदान-प्रदान शताब्दियों से होता रहा है।

भारतीय प्रायद्वीप के हिंदू तथा मुसलमानों की आस्थाओं में विरोधाभास नहीं है। भारत में इस्लाम-धर्म एवं सनातन-धर्म के मध्य विचारों तथा दर्शन का आदान-प्रदान शताब्दियों से होता रहा है। इस्लाम-धर्म का भारत में आगमन उस समय आरंभ हुआ, जब अरब के लोग सुदूर पश्चिम से समुद्र के रास्ते व्यापार के लिए भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर आने लगे। पश्चिमी गुजरात में सिद्दी, मेमन, बोहरा, खोजा इत्यादि मुसलमान समुदायों का मौजूद होना इस तथ्य का द्योतक है कि इस्लाम का प्रसार केवल बल प्रयोग से नहीं हुआ था। वर्ण व्यवस्था की आड़ में सदियों से हो रहे आर्थिक तथा सामाजिक शोषण से मुक्ति के लिए जहाँ एक ओर अनेक जातियों के सदस्यों ने इस्लाम-धर्म स्वीकार किया तो वहीं दूसरी ओर उन्हीं जातियों के दूसरे वर्ग ने हिन्दू-धर्म को संजोए रखा और यहीं से सम्मिश्रित संस्कृति का आविर्भाव हुआ। इसके साथ कुछ अन्य पंथों/धर्मों की भी नींव पड़ी, जो विरोधाभासी विचारधाराओं के मध्य सेतु बन गये। अंग्रेज़ी में इसे 'सिंक्रेटिज्म' और फ़ारसी में 'आईन तलफ़ीक़ी' कहा गया। सूफ़ी व बहाई धर्म की नींव भी इसी सिंक्रेटिज्म का उत्पाद है।

परस्पर सांस्कृतिक तथा धार्मिक आदान-प्रदान शताब्दियों से निरंतर चला आ रहा है और इसने अनेक नई विचारधाराओं को जन्म भी दिया है, जिनके अनेक उदाहरण हमें लोक-परम्पराओं में मिलते हैं।

भारतीय समुदायों के मानव-वैज्ञानिक अध्ययन के परिणाम चौंका देने वाले थे। पिपुल ऑफ इंडिया, इंट्रोडक्शन, 1994, एंथ्रोपोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार धार्मिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं की साझीदारी के क्षेत्र में 97.7 प्रतिशत हिन्दू तथा मुसलमान समुदायों में समानता पाई गई। अन्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन से यह तथ्य सामने आया कि 60 से 70 प्रतिशत मुसलमान समुदाय हिन्दू तीज-त्योहारों में भाग लेते हैं। परस्पर सांस्कृतिक तथा धार्मिक आदान-प्रदान शताब्दियों से निरंतर चला आ रहा है और इसने नई विचारधाराओं को जन्म भी दिया है, जिनके अनेक उदाहरण हमें लोक-परम्पराओं में मिलते हैं। सोलहवीं शताब्दी में बंगाल के सैयद सुलतान की कविता 'नबी बग्स' में हिन्दू -धर्म के प्रमुख देवी-देवताओं जैसे राम और कृष्ण को धर्म-प्रवर्तक महापुरुषों की उसी श्रेणी में रखा है जिसमें अब्राह्म, नूह, मूसा, ईसा आदम और मुहम्मद हैं। सैयद सुलतान ने इस्लाम के पैग़म्बर की वही परिकल्पना की है, जो हिन्दू-धर्म में अवतार की मानी जाती है। इस प्रकार राम और कृष्ण को पैग़म्बर माना गया।

भारतीय-संस्कृति के विकास के इतिहास में अनेक ऐसी घटनाएँ हैं जिन्हें हम उन प्रयत्नों का उदाहरण कह सकते हैं, जिन्होंने पंथों/धर्मों अथवा दर्शनशास्त्रीय धाराओं के मध्य उपस्थित अंतर को कम किया और एक प्रभावी संयोजनात्मक धरा का सृजन किया। इसका एक ज्वलंत उदाहरण हैं-खोजा मुसलमान समुदाय का सतपंथ 'इस्माइल-धर्म'। जनसंख्या तथा धार्मिक इतिहास एवं आस्था के आधार पर दक्षिण एशिया के मुसलमान समुदायों में एक अल्पसंख्यक समुदाय है खोजा, जो सिंध के मूल निवासी थे और पीर सदरुद्दीन से प्रभावित होकर इस्लाम-धर्म की ओर आकर्षित हुए। पीर सदरुद्दीन के विषय में अनेक लोक-कथाएँ प्रचलित हैं। इनके अनुसार वे सिंध से गुजरात आये। जातकों के अनुसार वे इस्माइल सम्प्रदाय की निज़ारी शाखा के एक 'दाई' (धर्मदूत के प्रतिनिधि) थे। इतिहासकारों का मानना है कि वे सिंध आने से पूर्व ईरान में सूफी अध्यापक थे। इस्लामी इतिहासकारों का मत है कि पीर सदरुद्दीन वास्तव में सैयद सदरुद्दीन अल-हुसैन थे, जो 14वीं शताब्दी के प्रसिद्ध धर्म-प्रचारक थे। इनका जन्म 700 हिजरा के रबिउल महीने की दूसरी तारीख़ को फ़ारस के गाँव सब्ज़वार में हुआ था। इस प्रकार पीर सदरुद्दीन के संबंध में अनेक लोकोक्तियाँ मिलती हैं। कुछ का मत है कि उनका मूल नाम सहदेव था और वे मौलिक रूप से मंदिर के पुजारी थे। किन्हीं कारणवश उन्हें मंदिर से पदच्युत कर दिया गया। इस घटना के बाद उन्होंने मंदिर छोड़ दिया और अपनी वेश-भूषा बदल कर अपना नाम सदरदीन रख लिया। बहुत समय तक वे ठक्कर समुदाय में धनाढ्य लोगों के मध्य रहे और रहन-सहन तथा पूजा-पद्धति का अध्ययन किया। ठक्करों की मान्यता थी कि भगवान विष्णु के नौ अवतार धरती पर अवतरित हुए तथा वे उनके दसवें अवतार के प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। पीर सदरुद्दीन ने उनको आश्वस्त कर दिया कि हज़रत अली ही विष्णु के दशम अवतार हैं। उन्होंने अनेक ठक्करों से 'सतपंथ' स्वीकार करवाया। सतपंथ, सूफी-हिन्दू विचारों का विशिष्ट सम्मिश्रण है। कुछ समय पहले तक आग़ा ख़ान के अनुयायिओं में 'दशावतार' नामक धर्म-ग्रंथ को प्राथमिक ग्रंथ माना जाता था।

सिंध से चला यह धर्मांतरण गुजरात के कच्छ और काठियावाड़ होता हुआ मुंबई तथा महाराष्ट्र के अन्य क्षेत्रों तक फैला। भारत में पश्चिमी क्षेत्र के गुजरात तथा महाराष्ट्र में बसे खोजा समुदाय के बारे में मानव-वैज्ञानिकों का मत है कि धर्मांतरण से पूर्व वे मूल रूप से लोहना जाति के थे। कुछ इतिहासकारों की धारणा है कि पीर सदरुद्दीन ने ठक्कर जाति के सदस्यों का निज़ारी इस्माइली में धर्मांतरण किया। कारण जो भी रहे हों, धर्मांतरित सदस्य ठक्कर जाति के सदस्य नहीं कहलाए जा सकते थे, अत: पीर सदरुद्दीन ने इनको 'ख्वाजा' की उपाधि दी। 'खोजा' 'ख्वाजा' का अपभ्रंश है। पीर सदरुद्दीन ने खोज की लिपि का भी विकास किया। अन्य मुसलमान समुदाय इन्हें निज़ारी कहते हैं और इस्लाम की व्याख्या करने वाले इनके धर्म को 'सतपंथ इस्माइल' धर्म कहते हैं।

यह सर्वविदित है कि इस्लाम-धर्म की दो प्रमुख शाखाएँ हैं - शिया और सुन्नी। भारत में शिया समुदाय अपना दीन तो इस्लाम को मानते हैं और मज़हब मानते हैं शिया। बारह इमामों को मानने वालों को 'असना अशरिया' कहते हैं। ये इमाम पैग़म्बर मुहम्मद के वंशधर हैं। खोजा समुदाय के धर्मगुरु वर्तमान आगा खान प्रिंस करीम हैं, जो पैग़म्बर मुहम्मद के चचेरे भाई अली के 49 वें वंशधर माने जाते हैं। इनके अनुयायी न केवल भारत में हैं अपितु पाकिस्तान, ईरान, यमन, पूर्वी अफ्रीका, अरब, श्रीलंका तथा म्यांमार में भी हैं।

सतपंथ का अर्थ है-मोक्ष के लिए सत्यपथ। इस पंथ के प्रचार के लिए पीर सदरुद्दीन ने अथक प्रयास किये। इस संबंध में उन्होंने वेदों और पुराणों का गहन अध्ययन किया और इस्लाम तथा हिन्दू-धर्म का तुलनात्मक, आध्यात्मिक और लौकिक विवेचना से प्राप्त अनुभवों के आधार पर इस मनोधारा का प्रचार किया कि अथर्ववेद, अल्लोपनिषद् आदि जैसे धर्म-ग्रंथों में इस्लाम के आगमन की भविष्यवाणियाँ की गई थीं। पीर सदरुद्दीन ने इन भविष्यवाणियों को और सहज एवं लोकप्रिय करने के लिए भारत की विभिन्न बोलियों में सैकड़ों धार्मिक सूक्तियों तथा पदों की रचना की, जो 'गिनन' (संस्कृत शब्द ज्ञानं से बना) के नाम से लोकप्रिय हुईं। इन रचनाओं में प्रमुख हैं, बुज नीरिनियन (ईश्वर का ज्ञान)। पीर इस ग्रंथ में अलौकिक प्रकाश में लीन हो जाने के तरीकों का वर्णन करते हैं।

'आराधना' (पूजा और अर्चना) - यह प्राथमिक रूप से ईश्वर का संक्षिप्त वंदना गीत है, जो हज़रत अली की वंदना में विकसित हो उन्हें प्रत्येक युग का प्रवर्तक मान उनकी वंदना है।

'विनोद' (आनंद अथवा परमसुख) - इसमें आरंभ में उस ईश्वर की उपासना है जिसने इस सृष्टि की रचना की और अंत में हज़रत अली की वंदना है।

'गायत्री' (इसकी रचना गायत्री की तरह की गई है, जो हिन्दुओं की पवित्र प्रार्थना है) - इसमें अनुयायियों को निर्देश दिया गया है कि वे मूल-धर्म की बातें भूलकर इस्लाम-धर्म की बातों को स्वीकार करें।

'अथर्ववेद' - इसमें अथर्ववेद की विशद् व्याख्या है।

'सूरत समाचार' (आविर्भाव की सूचना) - इसमें उदाहरणों के साथ यह तथ्य दर्शाया जाता है कि दो अच्छी वस्तुएँ विरले ही एक समय एक साथ होती हैं। इसमें अच्छाई और बुराई का तुलनात्मक विवरण है, पापियों के लिए दंड के प्रावधान की चर्चा है, अच्छे आचरण के निर्देश हैं। सही अर्थों में बोधगम्य की महानता का बखान आदि है।

'गर्भावली' (संक्षिप्त) : (गोपनीय) - इसमें शंकर तथा पार्वती के मध्य ब्रह्मांड, उसकी विषय-वस्तु इत्यादि के बारे में काल्पनिक संवाद का विवरण है।

जमातख़ाने में 'गिनन' गाते हुए एक खोजा

खोजा धार्मिक ग्रंथों तथा उसमें निहित विषयवस्तु के आधार पर यदि यह कहा जाये कि खोजा धर्म (सतपन्थ इस्माइल धर्म) हिंदू-धर्म तथा सूफीवाद से प्रेरित इस्लाम का अनूठा सम्मिश्रण है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।

'बुद्ध अवतार' - इसमें विष्णु के नवम अवतार बुद्ध की कथा है।

'दस अवतार' (संक्षिप्त) - इसमें विष्णु के दस अवतारों का वर्णन है और अंतत: इस्लाम का ज़िक्र किया गया है।

'मुनीवर भाई मोती' अथवा 'मोमिन चितवेणी' **(मोमिन के मन को बांधना अथवा मोमिन के मन की टोह लेना)** - इसमें संसार की रचना का वर्णन, विष्णु के दस अवतार लेने के कारणों, नीति-शास्त्र इत्यादि का वर्णन है।

'बावन घाटी' - उन 52 काल्पनिक घाटियों के विषय से संबंधित है जिनसे गुजार कर आत्मा से देवदूत उनके पृथ्वी पर किये गये कर्मों का ब्यौरा मांगेंगे।

'गर्भावली' (वृहद) - इसमें गूढ़ तत्वों के विषय में दिया गया है, जो संक्षिप्त गर्भावली का विस्तृत रूप है।

'खट निरिनजन' (षट निरंजन) - इसमें ब्रह्मांड की रचना, ईश्वर की स्तुति, इस्लाम तथा सतपंथ आदि की सुन्दरता तथा महानता का ब्यौरा है।

'खट दर्शन' (षट दर्शन) - दर्शन हिन्दू दर्शनशास्त्र की 6 धाराओं का एक सर्वसाधारण नाम है। इसमें सतपंथ के विभिन्न विषयों का ज़िक्र है और इसकी विषय-वस्तु के आधार पर इसे सतपंथ तथा खोजा साहित्य का विश्वकोश कहा जा सकता है।

बावन बोद्थसो किर्या तथा सही समरानी (52 सतर्कीकरण, 100 धार्मिक अनुष्ठान तथा वास्तविक स्मरण)- यह आचरण, नैतिकता, स्वच्छता इत्यादि विषयों से संबंधित है।

'सलोको' (संक्षिप्त श्लोकों का संग्रह) - इसमें अच्छाई और बुराई में भेद तथा तुलना के विषय हैं एवं उदाहरण में प्रार्थनाएँ, भक्ति, सत्यवचन इत्यादि का वर्णन है। कपटता तथा मूर्ति उपासना के विरुद्ध चेतावनी भी है।

'दुआ' (प्रार्थना) - वह प्रार्थना है, जो खोजा करते हैं और जिसमें इमामों व पीरों के नाम तथा उनकी वंदना है।

'गिनन' (धार्मिक स्रोत जिनमें ज्ञान निहित है) - 250 से अधिक गिनन हैं, जो विभिन्न विषयों जैसे नीतिशास्त्र, नैतिकता, आराधना, धार्मिक अनुष्ठानों के साथ धार्मिक कहानियों इत्यादि से संबंधित हैं। एक उदाहरण पवित्र गिनन से -

पीर सदरुद्दीन का सब घट सामी मारो भारपुर बेठा
एजी - सब घट सामी मारो भारपुर बेठा
तमे ग़ाफ़म दूर मा देखो
एक जी ओ जी , जीरेभाई रे (संख्या-6)
मुक्त अनुवाद
ओ भाई - सभी में मेरा मालिक सम्पूर्ण रूपेण है रहता
हे अज्ञान मानुष! उसको अपने से दूर न ढूंढो
वही केवल महिमामय है, ओ भाई

खोजा धार्मिक ग्रंथों तथा उसमें निहित विषयवस्तु के आधार पर यदि यह कहा जाये कि खोजा धर्म (सतपन्थ इस्माइल धर्म) हिंदू-धर्म तथा सूफीवाद से प्रेरित इस्लाम का अनूठा सम्मिश्रण है तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। खोजाओं में हाल ही में होने वाले अनुर्गठन से पूर्व यह विश्वास किया जाता था कि इमाम अली ही विष्णु के दशम अवतार हैं जिनकी अनेक काल से प्रतीक्षा की जा रही थी और इस्लाम-धर्म वैष्णव हिन्दुत्व का पूर्ण रूप है। इन धारणाओं के चलते इस समुदाय के सदस्य स्वयं को सच्चा हिन्दू अथवा इस्लाम दोनों के दृढ़मतवादी खोजाओं को अपना धर्म-भाई नहीं मानते थे। फरायजी और वहाबी जैसे अनेक सुधारवादी दलों ने मुसलमान समुदायों में चले आ रहे उन रीति-रिवाजों की आलोचना की, जो उनके अनुसार हिन्दुत्व से प्रेरित थे अथवा गैर-इस्लामी थे। दूसरी ओर हिन्दू पुनरुत्थानवादी दल इस जुगत में लग गये कि उन खोजाओं को पुन: हिन्दू-धर्म में विलय कर लिया जाये, जिनकी धार्मिक पहचान पर प्रश्न चिह्न लग चुका है।

कुछ समय पूर्व तक खोजाओं ने एक समय में अनेक अनन्यताओं में भाग लिया। उनका धार्मिक जीवन हिन्दू तथा मुसलमान एवं शिया तथा सुन्नी मान्यताओं और प्रथाओं का एक अभूतपूर्व सम्मिश्रण था। साथ ही वे स्वयं को और दूसरे उनको एक विशिष्ट जाति का मानते थे जिसका परम्परागत व्यवसाय था वाणिज्य/व्यापार। वास्तव में उनकी परम्परा यह दावा करती है कि 'खोजा' (अर्थात् स्वामी) की उपाधि जो उनको पंद्रहवीं शताब्दी के धर्म-प्रचारक पीर सहरुद्दीन ने दी थी और जो धर्मांतरण से पूर्व मौलिक हिन्दू लोहना जाति की उपाधि ठाकुर अथवा ठक्कर के बराबर थी तथा जिसका अर्थ था स्वामी, इस उपाधि को देने का आशय था जाति प्रधान सांस्कृतिक परिवेश में नये धर्मांतरित समुदाय को एक जातीय पहचान देना, क्योंकि यही पहचान सामाजिक स्थिति को परिभाषित करने का मूलभूत आधार है। अनेक सामाजिक प्रथाओं में खोजा परम्परागत भारतीय अथवा हिन्दू आदेशों को मानते हैं। उदाहरणस्वरूप विवाह से संबंधित पद्धति एवं लोकाचार/स्त्रियाचार में जो अनुष्ठान होते हैं, उनमें हिन्दुत्व की झलक मिलती है। हिन्दू आचार संहिता के समान विधवा विवाह अभी हाल तक वर्जित ही था। सम्पत्ति के क्षेत्र में स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं दिया गया है। विधवा विवाह प्रतिबंध और पैतृक संपत्ति से स्त्रियों को अलग रखने के बावजूद खोजा यथार्थ में मुसलमान ही हैं। जहाँ तक नमाज़ का प्रश्न है, वे पारम्परिक नमाज़ केवल ईद तथा बक़रीद के मौकों पर ही पढ़ते हैं। साधारण दिनों में उनकी नमाज़ की भाषा गुजराती होती है, जो वे दिन में तीन बार पढ़ते हैं जिसमें अरबी और फारसी के शब्द एवं मुहावरे होते हैं। धर्माचरण की अन्य पद्धतियाँ बहुत कुछ शक्ति पंथी लोहना से मिलती-जुलती हैं। धार्मिक अनुष्ठानों में स्तुति-गान, जिन्हें वे 'गिनन' कहते हैं, का आयोजन करते हैं। गिनन उत्तर भारतीय लोक-गीत परम्परा से प्रभावित है। जबकि उनके धर्म-साहित्य का बड़ा भाग अरबी और फारसी में ही है। गिनन में, जिसमें हिन्दू अथवा भारतीय धार्मिक परिकल्पनाओं, विचारों तथा दर्शन का समावेश है, पर अनेक कट्टरपंथी मुल्लाओं ने प्रश्न उठाया है कि क्या 'गिनन' गैर-इस्लामी नहीं है? गिनन खोजाओं के धार्मिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अन्य भारतीय भक्ति गीतों की परम्परानुसार गिनन की बन्दिशें भी रागों के आधार पर होती हैं और उनको राग आधारित धुनों में ही प्रस्तुत किया जाता है। अत: गिनन खोजा धार्मिक प्रार्थनाओं का एक अभिन्न अंग है। ये धार्मिक प्रार्थनाएं 'जमातख़ानों' (प्रार्थना-गृह) में सुबह-शाम होती हैं। खोजाओं के लिए गिनन गाना एक धर्माचरण है, जो ठीक उन अन्य शियाओं की तरह है जो विशेषकर मुहर्रम के महीने में सामूहिक रूप से नोहे/ मरसिए पढ़ते हैं। गिनन जब सामूहिक रूप में गाये जाते हैं तो सुनने वाले में भक्ति-भाव उजागर होते हैं और अक्सर देखा गया है कि भाषा न समझने के बावजूद लोग इतने भाव-विभोर हो जाते हैं कि उनकी आँखों से अविरल अश्रुधारा बहने लगती है।

अलगाववाद, कट्टरवाद, साम्प्रदायिकतावाद फैलाने वाली शक्तियों के विरुद्ध यह सांस्कृतिक सेतु विद्यमान रहेगा, यह तो समय ही बताएगा।

- डॉ. सैयद हसन मुज्तबा रिज़वी